डॉ० शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस० आर० ए० पी० कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part – 1
General & Subsidiary
HINDI

Date:- 17-01-2022

Ajanta
Page No.
Date

'निसि दिन बरसत नैन हमारे'

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हम पर,
जबते स्याम सिधारे॥
अंजन थिर न रहत अँखियन में,
कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहुँ,
उर बिच बहत पनारे॥
आँसू सलिल भये पग धाके,
बहे जात सित तारे।
'सूरदास' अब डूबत है ब्रज,
काहे न लेत उबारे॥

शब्दार्थ :-

- निसि – रात
- पावस – वर्षा
- सिधारे – गये
- दृग – आँख
- अंजन – काजल
- उर – हृदय
- कपोल – गाल
- भए कारे – काले हो गये
- पनारे – नाली
- अंबु – जल
- उबारे – रक्षा

व्याख्या :-

कृष्ण को संबोधन देते हुए गोपियाँ कहती हैं कि हे श्याम! जब से तुम ब्रज छोड़कर मथुरा गए हो, तभी से हमारे नयन नित्य ही

Scanned by CamScanner

वर्षा के जल की भाँति बरस रहे हैं अर्थात् तुम्हारे वियोग में हम दिन-रात रोती रहते हैं। रोते रहने के कारण इन नयनों में काजल भी नहीं रह पाता अर्थात् वह भी आँसुओं के साथ बहकर हमारे कपोलों (गालों) को भी श्याम-वर्णी कर देता है। कंचुकि (चोली या अंगिया) आँसुओं से इतनी अधिक भीग जाती है कि सूखने का कभी नाम भी नहीं लेती। इन निरन्तर बहने वाले आँसुओं को कारण हमारी यह देह जल का स्त्रोत बन गई है, जिसमें से जल सदैव रिसता रहता है। सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कृष्ण से कहती हैं कि हे कान्हा! इन आँसुओं में ब्रज डूब रहा है... आ के इसे बचा क्यों नहीं लेते?

Scanned by CamScanner